>

Title: Need to release commemorative postage stamp in honour of Dalit Saint Veer Meghmaya of Gujarat.

डॉ. किरीट प्रेमजीभाई सोलंकी (अहमदाबाद पश्चिम): सभापति महोदय, मैं आपका धन्यवाद करता हूँ कि आपने एक महत्वपूर्ण विषय उठाने की मुझे अनुमति दी है।

महोदय, दलित संत वीर मेघमाया ने दुखी प्रजा को जो राहत पहुँचाई थी, उनकी बात उजागर करने के लिए तथा दलितों को उन्होंने जो सम्मान दिया था, इस बात को उजागर करने के लिए मैं खड़ा हुआ हूँ।

महोदय, करीब 800 साल पहले पाटन गुजरात की राजधानी हुआ करती थी। इस वक्त वहाँ सिद्धराज जयसिंह सोलंकी नामक राजा बहुत प्रभावी राजा राज करते थे। उस वक्त उस राज्य में बहुत भीषण अकाल पड़ा और अकाल की वजह से प्रजा पानी के लिए त्रस्त थी। प्रजा को पानी नहीं मिलता था। उसी वक्त सिद्धराज जयसिंह ने सहस्त्रलिंग सरोवर का निर्माण किया। उस सरोवर के चारों ओर 1000 शिवलिंग हुआ करते थे, मगर सिद्धराज जयसिंह को एक सती का श्राप होने की वजह से उस सरोवर में पानी उपलब्ध नहीं होता था। तब ज्योतिषियों ने ऐसी घोषणा की कि यदि कोई 32 लक्षण पुरुष का बलिदान वहाँ दिया जाए तो वहाँ पानी आ सकता था। दलित संत वीर मेघमाया जो 32 लक्षणयुक्त थे, उन्होंने प्रजा के दुख दूर करने के लिए अपने प्राणों की आहूति दी और प्यासी प्रजा को पानी उपलब्ध कराया। इस कार्य से उन्होंने दलितों के प्रति अस्पृश्यता, दलितों के प्रति अन्याय एवं अतिक्रमणों से भी दलितों को मुक्त किया था और दलितों को एक अस्मिता प्रदान की थी। मैं आपके माध्यम से भारत सरकार से याचना करता हूँ कि ऐसे महान् संत वीर मेघमाया की स्मृति में एक डाक टिकट जारी किया जाए।

सभापति महोदय: श्री महेन्द्र सिंह पी. चौहान तथा श्री अर्जुन राम मेघवाल का नाम श्री किरीटभाई प्रेमजीभाई सोलंकी द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध किया जाता है।